POLITICAL SCIENCE Dep.
B.A-I (Hons) Paper I

Dr. HUSNA ARA
Asst. Professor
Dr. LKVD college, Tajpur,
Samastipur

सम्प्रभुता का बहुलवादी सिद्धांत

सम्प्रभुता के एकत्ववादी धारणा के विरोध में सम्प्रभुता के एकत्ववादी सर्वोच्च सत्ता की अधीनता को अनेक विद्वानों ने खारिज कर दिया। इसके स्थान पर सम्प्रभुता की बहुलवादी धारणा का विकास हुआ। बहुलवादी विचारधारा के अनुसार राज्यसत्ता सम्प्रभु और निरंकुश नहीं है। समाज में विद्यमान अनेक समुदायों का अस्तित्व राज्यसत्ता को सीमित करता है। लास्की, मैकाइवर, बार्कर आदि प्रमुख बहुलवादी विचारक हैं।

लास्की के अनुसार "समाज के ढाँचे को पूर्ण होने के लिए उसे संघात्मक होना चाहिए।"

बार्कर के शब्दों में "कोई भी राजनीतिक सिद्धांत इतना निष्फल नहीं हुआ है जितना कि प्रभुत्वसम्पन्न राज्य का सिद्धांत।"

बहुलवादी इस बात को मान्यता नहीं देते कि राज्य एक सर्वोच्च समुदाय है। उनका मानना है कि अन्य सभी समुदाय वैसे ही महत्वपूर्ण हैं जैसे कि राज्य। इन समुदायों का प्रादुर्भाव स्वतः एवं स्वभावतः होता है। जैसे:- पारिवार, चर्च, मजदूर संघ आदि।

Scanned with CamScanner